ग्राफ़िक डिज़ाइ

सूची

ग्राफ़िक डिज़ाइन – परिचय

ग्राफ़िक कला, डिज़ाइन और ग्राफ़िक डिज़ाइन

ग्राफ़िक डिज़ाइन के तत्व और सिद्धांत

इकाई I

ग्राफ़िक डिज़ाइन के मूल आधार

ग्राफिक डिज़ाइन, जिसे हिंदी में आलेखीय रूपांकन या अभिकल्पन कह सकते हैं, एक ऐसा विषय है जो अनेक प्रकार के कलात्मक तथा व्यावसायिक विषयों तथा शास्त्रों से जुड़ा है। ये विषय दृश्य संचार और प्रस्तुति पर आधारित होते हैं। विचारों और संदेशों का दृश्य निरूपण करने के लिए एक साथ अनेक प्रतीकों, आकृतियों या छवियों और शब्दों द्वारा कई तरीके काम में लाए जाते हैं। किसी ग्राफिक डिज़ाइन में वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए भिन्न-भिन्न मात्राओं में मुद्रणकला (Typography), दृश्य विधान (Visual) और विन्यास (Layout) की तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। इसमें प्रक्रिया (डिज़ाइनिंग) जिससे संप्रेषण उत्पन्न किया जाता है और उत्पाद (डिज़ाइन्स) दोनों शामिल होते हैं।

किसी डिज़ाइन में शुभंकर (Logo) या अन्य कलात्मक कार्य, सुगठित प्रलेख और डिज़ाइन संबंधी विशुद्ध सिद्धांत तथा रूप, रंग, संतुलन, समरसता जैसे वे तत्व शामिल होते हैं जो उस डिज़ाइन को एक समन्वित रूप देते हैं। संयोजन (Composition) ग्राफिक डिज़ाइन के सबसे महत्वपूर्ण अवयवों में से एक है जो उस स्थिति में अपना सर्वोपरि स्थान प्राप्त कर लेता है जब डिज़ाइन के कार्य में पहले से मौजूद सामग्री का उपयोग किया जाता है अथवा विभिन्न प्रकार के तत्वों को प्रयोग में लाया जाता है।

© NCERT not to be republished

© NCERT not to be republished

1

अध्याय

ग्राफ़िक डिज़ाइन परिचय

जब हम अपने चारों ओर दृष्टिपात करते हैं तो यह पाते हैं कि हम बहुत से चित्रों, छायाचित्रों और आकृतियों/छवियों से घिरे हैं। ये दृश्य वस्तुएँ ग्राफिक डिज़ाइन के ही नाना रूप हैं। ग्राफिक डिज़ाइन हमारी रोजमर्रा की ज़िंदगी का हिस्सा है जिसमें डाक टिकट जैसी छोटी चीज़ से लेकर बड़े-बड़े विज्ञापन पट्ट और कपड़े आदि पर छपे इश्तहार शामिल होते हैं। ग्राफिक डिज़ाइन सौंदर्यपरक एवं सुरुचिपूर्ण तरीके से हमें विचारों का आदान-प्रदान करने, संदेश देने, मन को प्रेरित करने, ध्यान आकर्षित करने और सूचना देने में सहायता देती है। ग्राफिक डिज़ाइन दृश्य संप्रेषण एवं संपर्क का एक प्रमुख साधन है और इसमें संचार के तरह-तरह के माध्यम और तरीके शामिल होते हैं जिनके द्वारा हम लक्ष्यगत दर्शकों तथा श्रोताओं तक अपनी बात पहुँचाते हैं। ये दृश्य साधन चिंतन, भाव, विचार तथा वास्तविकता का निरूपण करते हैं।

अपने विचारों का आदान-प्रदान करते या संदेश देते समय जब कोई व्यक्ति किसी भाषा का प्रयोग करता है तो इस क्रिया को 'शाब्दिक संचार' (verbal communication) कहा जाता है। रेडियो प्रसारण और लाउडस्पीकर पर की जाने वाली उद्घोषणाएँ शाब्दिक संचार के बहुत अच्छे उदाहरण हैं। लेकिन यदि कोई व्यक्ति भाषा का प्रयोग नहीं करता और अपने विचारों या भावों को व्यक्त करने के लिए किसी अन्य माध्यम का प्रयोग करता है तो उस क्रिया को 'अशाब्दिक संचार' (non-verbal communication) कहा जाता है। अशाब्दिक संचार दृश्य आकृतियों, शुभंकर (logo), अखबारी विज्ञापनों और संगीत, नृत्य, शारीरिक संकेतों या अभिनय आदि माध्यमों के द्वारा किया जाता है। फिल्में, टेलीविज़न, थिएटर, एनिमेशन (अनुप्राणन), मल्टीमीडिया (बहुविध संचार साधन) और इंटरनेट आदि संचार के कुछ ऐसे उदाहरण हैं जिनमें संचार के शाब्दिक और अशाब्दिक दोनों माध्यमों का सफलतापूर्वक प्रयोग किया जाता है।

संचार के अशाब्दिक माध्यमों के अंतर्गत, दृश्य माध्यमों का सर्वाधिक प्रयोग किया जाता है। ग्राफिक डिज़ाइन का संबंध मुख्यत: दृश्य संचार से ही है। आधुनिक ग्राफिक डिज़ाइन पद्धति का डिज़िटल प्रौद्योगिकी में भी प्रयोग किया जाता है। आज अधिकांश ग्राफिक डिज़ाइनर नए-नए क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं; जैसे– नए संचार माध्यमों, अन्योन्य-सक्रिय डिज़ाइन, सूचना संबंधी वास्तुकला

© NCERT not to be republished

और ग्राफिकल यूज़र इंटरफेस (जी.यू.आई.) आदि। इसलिए आज किसी भी ग्राफिक डिज़ाइनर को अनेक प्रकार के तकनीकी कौशलों, सौंदर्यबोध, कल्पनाशील मन-मस्तिष्क और सृजनशीलता की आवश्यकता होती है। इतना सब कुछ बता देने के बाद भी आप यह सोच रहे होंगे कि आखिर यह ग्राफिक डिज़ाइन वास्तव में होती क्या है?

ग्राफ़िक डिज़ाइन सर्वत्र देखने को मिलती है

सूरज उगता है ...

चिड़िया चहचहाती है ...

... आँखें खुलती हैं ...

चित्र 1.1 मोर के पंख पर डिज़ाइन का एक बेहतरीन नमूना

आप बिस्तर पर जग जाते हैं और समाचारपत्र के शीर्षकों को पढ़ते हैं (यह मुद्रणकला का एक ग्राफिक डिज़ाइन है!)।

आप नाश्ता लेते हैं और दूध की थैली या बोतल पर छपा हुआ शुभंकर (logo) देखते हैं (यह भी एक ग्राफिक डिज़ाइन है)।

आप बाइक चलाते हैं और सड़क पर यातायात के संकेतों (ट्रैफिक साइन) को देखते हैं (यह भी ग्राफिक डिज़ाइन है)।

आप अपना कंप्यूटर खोलते हैं और 'आइकॉन' पर क्लिक करते हैं (यह भी ग्राफिक डिज़ाइन है)।

इसी तरह, ग्राफिक डिज़ाइन के और भी अनेक उदाहरण हो सकते हैं।

ग्राफिक डिज़ाइन हमारी जीवन-शैली में बहुत ज़्यादा रच-बस गई है। हम सुबह जब उठते हैं तब से लेकर रात को जब तक सो नहीं जाते हम तरह-तरह की ग्राफिक डिज़ाइनों से घिरे रहते हैं।

© NCERT not to be republished

ग्राफ़िक डिज़ाइन वस्तुओं को बोधगम्य बनाती है

हम सवेरे उठते हैं और घड़ी में समय देखते हैं। घड़ी पर अंकित अंकों की पठनीयता और उसके डायल का रंग हमें प्रभावित करता है। फिर हम सूचना या खबरें जानना चाहते हैं और इसके लिए समाचारपत्र पढ़ते हैं। समाचारपत्र के सभी पृष्ठ समाचारों से भरे होते हैं। उन्हें पढ़ते समय हमारा ध्यान समाचारपत्र की पाठ्यसामग्री, अक्षरों के आकार और उसकी रूपरेखा पर भी जाता है।

चित्र 1.2 डिज़िटल घड़ी

चित्र 1.3 पुस्तक, पत्रिका और समाचारपत्र पर लिखित सामग्री और दृश्य चित्र दोनों होते हैं।

ग्राफ़िक डिज़ाइन – एक कहानी

क्या आप किसी ऐसे समाचारपत्र की कल्पना कर सकते हैं जिसमें पाठ्यसामग्री बिना स्तंभों में वर्गीकृत किए ऐसे सर्वत्र बिखरी पड़ी हो? ग्राफिक डिज़ाइन की सहायता से हम किसी भी विषय को अधिक आसानी से समझ सकते हैं। ग्राफिक डिज़ाइन स्पष्ट एवं कल्पनाशील दृश्यों के माध्यम से संदेश देने या विचारों का आदान-प्रदान करने में सहायक होती है। इस प्रकार ग्राफिक डिज़ाइन ने समाज को रचनात्मक रीति से हमेशा सकारात्मक योगदान देते हुए प्रभावित किया है। ग्राफिक डिज़ाइन लोगों की प्रवृत्तियों को, उनके सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक जीवन से जोड़कर समझने में सहायक होती है और इस प्रकार पर्यावरण तथा समाज के बारे में जागरूकता उत्पन्न करती है। ज़रा सोचिए, यदि किसी नए यंत्र के बारे में आपको कोई निर्देश पुस्तिका नहीं दी जाए तो आप उस यंत्र को कैसे चलाएँगे?

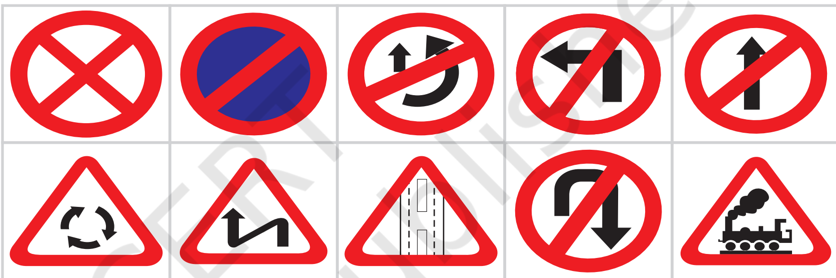

चित्र 1.4 यातायात के संकेतों का भी अर्थ होता है जिससे उनका अनुकरण करने को सूचना मिलती है

ग्राफ़िक डिज़ाइन सुरक्षा प्रदान करती है

आप घर से बाहर कदम रखते हैं और अपने चारों ओर अनेकानेक ग्राफिक आकृतियाँ या छवियाँ देखते हैं, जैसे, पास की दीवार पर लगा कोई इश्तहार (poster), दुकान पर लगा बिलबोर्ड और निओन साइन (चमकदार रोशनी में दिए गए संकेत) और अन्य कई तरह के संकेत तथा प्रतीक। क्या आप जानते हैं कि अगर सड़कों पर ऐसे संकेत या प्रतीक न हों तो रोज कितनी दुर्घटनाएँ होंगी?

प्राचीनतम सड़क संकेत मील के पत्थर थे जिनसे दूरी तथा दिशा का ज्ञान होता था; उदाहरण के लिए, रोम के सम्राटों ने अपने संपूर्ण साम्राज्य में पत्थर के खंबे लगवाए थे जिन पर लिखा गया था कि वहाँ से रोम नगर कितनी दूरी पर है। मध्ययुग में सड़कों के चौराहों पर बहु-दिशा सूचक संकेत लगाना एक आम बात हो गई। यातायात के अधिकांश संकेतों का बुनियादी स्वरूप रोम में 1908 में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सड़क कांग्रेस के सम्मेलन में तय किया गया था। तब से उन संकेतों को अधिक यात्री-अनुकूल और अर्थपूर्ण बनाने के लिए इनमें समय-समय पर काफी परिवर्तन किए जाते रहे हैं।

चित्र 1.5 रोम साम्राज्य में प्रयुक्त मील का पत्थर

अब तो सभी देशों में यात्रियों को सूचना एवं सुविधा देने के लिए सड़कों के किनारे यातायात संकेत लगाना एक आम बात हो गई है। चूँकि भिन्न-भिन्न लोग अलग-अलग भाषाएँ बोलते, पढ़ते और लिखते हैं, इसीलिए संभव है कि उन्हें पराई भाषा-लिपि के शब्द पढ़ने या समझने में कठिनाई हो, इसलिए अब शब्दों की बजाय अंतर्राष्ट्रीय संकेतों, जो प्रतीकों के रूप में होते हैं, विकसित कर लिए

© NCERT not to be republished

ग्राफ़िक डिज़ाइन – एक कहानी

सड़क संकेतों से लेकर तकनीकी रिपोर्टों तक, अंतर-कार्यालयिक ज्ञापनों से लेकर सूचना या निर्देश पुस्तिका (manual) तक, सर्वत्र ग्राफिक डिज़ाइनें तरह-तरह की जानकारियाँ देती हैं। दृश्य प्रस्तुति के द्वारा मूल पाठ्य की पठनीयता बढ़ जाती है। ग्राफिक डिज़ाइन सूचना को बोधगम्य बना देती है, इसलिए ज़िंदगी आसान हो गई है। यदि दिशा-सूचक संकेत न लगाए जाएँ तो न जाने कितने लोग रास्ते से भटक जाएँगे!

गए हैं। ये प्रतीक अब अधिकांश देशों में प्रयुक्त होते हैं।

भारतीय राजमार्गों पर लगाए जाने वाले मील के पत्थरों की पृष्ठभूमि सफेद होती है और ऊपरी सिरा पीला या हरा होता है। उन पर सबसे नज़दीकी नगरों और स्थान के नाम और किलोमीटर में उनकी दूरी लिखी होती है। हमारे अविभाजित राजमार्गों पर लगे मील के पत्थरों पर दोनों ओर सूचना लिखा दी जाती है जिससे दोनों दिशाओं में स्थित निकटतम शहरों की दूरी बताई जाती है। मील के पत्थर के ऊपरी सिरे पर राजमार्ग का नंबर लिखा जाता है। मील के पत्थर पर लिखी गई संख्या यह बताती है कि यात्री ने कितनी दूरी तय कर ली है और कितनी बाकी है। समय के बदलाव के साथ यातायात के संकेतों की नई-नई शृंखलाएँ विकसित हो गई हैं जिनकी सूचना प्रणाली काफी सूझ-बूझ से भरी है। आज संकेत लिखने की ऐसी सामग्रियों का प्रयोग किया जाता है जिससे रात के अंधेरे में और कम रोशनी में भी उन्हें पढ़ा-समझा जा सकता है।

चित्र 1.6 विभिन्न रंगों के संकेत भिन्न-भिन्न निर्देश देते हैं। पैदल चलने वालों को सुरक्षापूर्वक सड़क पार करने में 'ज़ेब्रा क्रॉसिंग' सहायक होती है।

ग्राफ़िक डिज़ाइन और पहचान

यह स्पष्ट है कि मानव आदिकाल से ही रूपों और प्रतीकों से संबंधित रहा है और इनकी बदौलत ही मनुष्यों को संबंध और पहचान बनाने में सहायता मिली है। आरंभिक काल से ही लोग अपनी पहचान को प्रदर्शित करने के लिए झंडों का प्रयोग करते रहे हैं। झंडा कपड़े का एक टुकड़ा होता है जो अक्सर किसी डंडे या मस्तूल पर फहराया जाता है। इसका प्रयोग आमतौर पर कोई संकेत देने या पहचान बताने के लिए प्रतीकों के रूप में किया जाता है। पहले इसका प्रयोग विशेष रूप से ऐसे स्थानों पर किया जाता था जहाँ संचार या संदेश देने का कोई आसान तरीका नहीं होता था। आज भी इसका उपयोग रेलों, जहाज़ों, हवाई अड्डों पर संकेत देने

© NCERT not to be republished

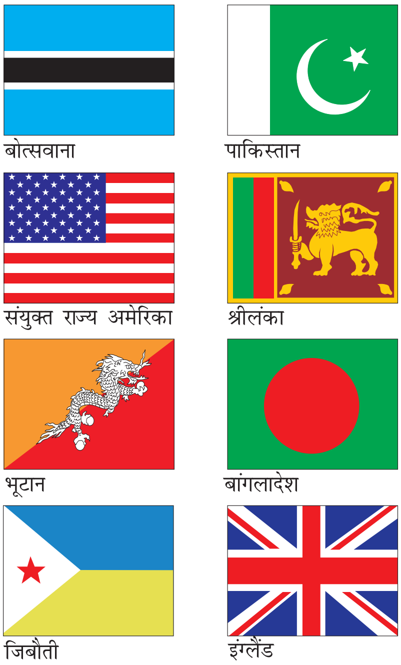

चित्र 1.7 विभिन्न राष्ट्रों के झंडे

के लिए किया जाता है। झंडे परियोजनाओं, संस्थानों तथा राष्ट्रों की पहचान करने में भी सहायक होते हैं।

झंडों का आविष्कार और सर्वप्रथम प्रयोग प्राचीन भारतीयों द्वारा किया गया था। भारत और चीन की देखादेखी इनके पड़ोसी देश बर्मा, थाईलैंड और दक्षिण-पूर्व एशियाई देश भी इनका प्रयोग करने लगे। सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाओं या समूहों ने भी अपने धर्म, संघों, खेलों आदि की पहचान बनाने के लिए अपने-अपने झंडे अपना लिए। संस्थाएँ और संगठन अपने झंडों के माध्यम से अपनी विचारधाराएँ और सिद्धांत प्रस्तुत करते हैं। तथ्यत: हर संस्था अपने कतिपय विचारों तथा सिद्धांतों पर चलती है और वह अपने झंडों के माध्यम से अपनी पहचान बनाती है और लोगों का विश्वास जीतती है।

राष्ट्रीय ध्वज देशभक्ति के प्रतीक होते हैं और कई रंगों के होते हैं और ये रंग अनेक भावों के द्योतक होते हैं। अनेक राष्ट्रीय ध्वज और अन्य झंडे भिन्न-भिन्न प्रतीकात्मक डिज़ाइनों या रूप-रंग के होते हैं और झंडे आमतौर पर आयताकार होते हैं। सामान्यतया उनकी लंबाई-चौड़ाई का अनुपात 3:2 या 5:3 होता है और उनकी आकृति या आकार ऐसा होता है जो फहराने के लिए उपयुक्त हो। कुछ झंडे वर्गाकार, त्रिभुजाकार या अबाबील की पूँछ जैसे होते हैं जो आमतौर पर कई रंगों और प्रतीकों से बने होते हैं।

शुभंकर भी पहचान का एक अन्य रूप होता है। हमें अपने चारों ओर अलग-अलग तरह के अनेक लोगो, प्रतीक और छाप (ब्रांड) देखने को मिलते हैं।

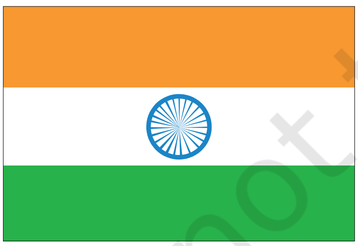

चित्र 1.8 भारतीय राष्ट्रीय ध्वज

भारत का राष्ट्रीय ध्वज भारत की भूमि और लोगों का प्रतीक है। हमारा राष्ट्रीय ध्वज एक तिरंगा फलक है जो तीन आयताकार फलकों या पट्टियों के मेल से बना है जिनकी चौड़ाई एकसमान होती है। सबसे ऊपर के फलक (पट्टी) का रंग केसरिया और सबसे नीचे के फलक का रंग भारतीय हरा है। बीच का फलक सफेद होता है और उसके केंद्र भाग में अशोक चक्र का चिह्न बना होता है। इस चक्र का रंग गहरा नीला (navy blue) होता है और इसमें समान दूरी पर 24 आरे बने होते हैं। अशोक चक्र झंडे के दोनों ओर सफेद फलक के बीचोंबीच बना होता है। झंडा आयताकार होता है जिसकी लंबाई और चौड़ाई का अनुपात 3:2 होता है।

संविधान सभा में जब इस झंडे को राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाया गया था तब डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने इसके रूपरंग का विश्लेषण करते हुए कहा था कि "इसका भगवा या केसरिया रंग त्याग और अनासक्ति का द्योतक है। बीच का सफेद रंग प्रकाश यानी सच्चाई के मार्ग का सूचक है जो हमारे आचार-व्यवहार के मामले में हमारा पथ-प्रदर्शन करेगा। हरा रंग भूमि और वनस्पति से हमारे संबंधों को दर्शाता है जिस पर हमारा सारा जीवन निर्भर होता है। अशोक चक्र धर्म यानी कानून का पहिया है। सत्य और धर्म उन लोगों के नियंत्रक सिद्धांत होने चाहिए जो इस ध्वज की छत्रछाया में काम करते हैं, इसके अलावा पहिया गति का भी द्योतक है। गति में ही जीवन होता है। भारत को गतिमान रहते हुए आगे बढ़ना होगा।"

© NCERT not to be republished

शुभंकर या लोगो किसी संस्था या संगठन की विचारधारा और सिद्धान्तों का प्रतीकात्मक दृश्य एवं शाब्दिक पाठ्य निरूपण होता है। लोगोटाइप एक ऐसा प्रतीक होता है जिसमें अक्षररूपों या टाइपफेसों का प्रयोग किया जाता है।

चित्र 1.9 विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के लोगो

चित्र 1.10 एड्स (एक्वायर्ड इम्यून डिफिसिएंसी सिन्ड्रोम)

चित्र 1.11 संस्थागत और गणितीय प्रतीक

ग्राफिक डिज़ाइनों में किसी उत्पाद या विचार को प्रभावकारी दृश्य संचार के माध्यम से बेचने की अद्भुत क्षमता होती है। लोगो, शब्दों या अक्षरों और रंग का इस्तेमाल किसी कंपनी की पहचान बनाने के लिए किया जाता है। निगमित क्षेत्र और उद्योग जगत में ब्रांड अपनाने का चलन बराबर बढ़ता जा रहा है। जब आप कोई चीज़ खरीदने बाज़ार में जाते हैं तो आपको चयन के लिए उस चीज़ के कई विकल्प होते हैं लेकिन इनमें से कुछ ही आपके ध्यान को आकर्षित करते हैं क्योंकि उनकी डिज़ाइन और पैकेटबंदी (पैकेजिंग) आकर्षक होती है। पैकेजिंग की डिज़ाइन भी ग्राफिक डिज़ाइन का ही हिस्सा है; और किसी वस्तु के चयन या पहचान में उसका भी महत्वपूर्ण स्थान होता है।

ग्राफ़िक डिज़ाइन अभिव्यक्ति एवं सूचना का माध्यम होती है

सड़क के आस-पास का हर संकेत आपको बुलाता है और आपका ध्यान आकर्षित करने की कोशिश करता है। सच तो यह है कि पढ़े-लिखे और अनपढ़ दोनों ही तरह के लोग दृश्य सूचनाओं या रूपांकनों से समान रूप से लाभान्वित होते हैं। आप बस या ट्रेन में कदम रखते हैं तो आपको अपने चारों ओर बहुत-सी जानकारी देखने को मिलती है। दुकानों, बड़े-बड़े वस्तु-भंडारों से लेकर शहर या कस्बे में आयोजित उत्सवों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि के बारे में जानकारी या सूचना देने का काम भी ग्राफिक प्रतीकों के माध्यम से होता है। प्राकृतिक आपदाओं, भूकंपों, अन्य आपदाओं, यहाँ तक कि युद्ध के दौरान भी सूचना देने का काम भी इस माध्यम से आसानी से किया जा सकता है।

सभी विषयों, विशेष रूप से भूगोल, विज्ञान, भाषा, इतिहास और गणित की पाठ्यपुस्तकों में सिद्धांतों और संकल्पनाओं को स्पष्ट करने के लिए रूपांकनों (ग्रफिक्स) का प्रयोग किया जाता है। पुस्तकों में आमतौर पर पाई जाने वाली ग्राफिक सामग्री इसका एक सामान्य उदाहरण है : मानचित्र और आरेख (diagram)। शिक्षण सामग्री को अधिक सुलभ, दिलचस्प और आसान बनाने के लिए पाठ्यपुस्तकों आदि में ग्राफिक डिज़ाइनों का इस्तेमाल किया जाता है।

ग्राफिक डिज़ाइन प्रयोगकर्ता की पारस्परिक सक्रियता और दृश्य संचार के साथ मिलकर सौन्दर्यात्मक सक्रिय वेबसाइट के माध्यम से सूचना प्राप्ति को एक लुभावना अनुभव बना देती है। वेबसाइट दृष्टि और अनुभूति दोनों को सक्रिय बनाकर प्रयोक्ता के ऑनलाइन अनुभव को बढ़ा देती है। वेबसाइट का हर पृष्ठ

© NCERT not to be republished

ग्राफ़िक डिज़ाइन – एक कहानी

चित्र 1.12 ग्राफिक के साथ पाठ्यसामग्री

> डिज़ाइन का काम केवल छवियाँ/आकृतियाँ बनाना ही नहीं होता, बल्कि यह नया चिंतन उत्पन्न करती है, मन-मस्तिष्क को उत्प्रेरित करती है, मन:स्थिति को बनाती या बदलती है और अंततोगत्वा जनसाधारण और समाज को बदल देती है।

प्रतीकों (आइकनों) से भरा होता है। आप सूचना की खोज में किसी आइकन को क्लिक करें और जानकारी की पूरी दुनिया आपके सामने खुल जाएगी। आप जितना ज़्यादा खोजते जाएँगे उतनी ही ज़्यादा जानकारी आपको मिलती जाएगी। ग्राफिक विचारों को अनुभवजन्य विचारों में परिवर्तित करने के साथ-साथ, आपको डिज़िटल माध्यम की बारीकियों को समझना भी ज़रूरी है।

ग्राफिक डिज़ाइन तैयार करने के लिए सबसे पहले सृजनशील मन-मस्तिष्क की अवश्यकता होती है। सूक्ष्म अवलोकन, समीक्षात्मक चिंतन, और विश्लेषणात्मक सोच सब मिलकर ग्राफिक डिज़ाइन की क्षमता को बढ़ा देते हैं। ग्राफिक डिज़ाइन के पारंपरिक उपकरणों जैसे– पेंसिल, पेन एवं ब्रश तो आवश्यक हैं ही इसके अतिरिक्त, समकालीन ग्राफिक डिज़ाइन के लिए डिज़िटल उपकरणों और प्रौद्योगिकी को समझना भी जरूरी होता है। साथ ही साथ संचारगत समाधान प्राप्त करने के लिए उपयुक्त उपकरणों का चयन भी ग्राफिक डिज़ाइन के कौशल की कुंजी है और निश्चित रूप से वह सौंदर्यपरक एवं प्रभावपूर्ण डिज़ाइन का मूल आधार है।

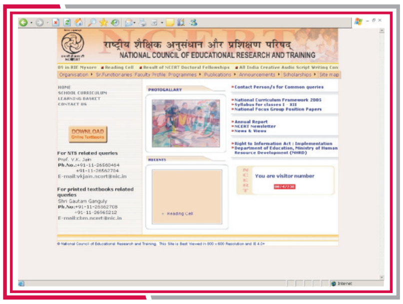

चित्र 1.13 सक्रिय आइकनों और दृश्यमान वस्तुओं के साथ एनसीईआरटी की वेबसाइट का होमपेज

© NCERT not to be republished

प्रश्नावली

1. शाब्दिक संचार और अशाब्दिक संचार में क्या अंतर है, सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
2. आपके विचार में ग्राफिक डिज़ाइन सुरक्षा प्रदान करने में कैसे सहायक होती है?
3. डिज़ाइन की पहचान करने में ग्राफिक डिज़ाइन कैसे योगदान देती है? चर्चा करें।

प्रायोगिक

कम से कम बीस शुभंकरों के नमूने इकट्ठा करें। उनमें से उन पाँच प्रतीकों को चुनें जिन्हें आप सबसे ज़्यादा पसंद करते हैं और उनकी ग्राफिक विशेषताओं का विश्लेषण करें।